पृष्ठ संख्या : ४०३ से ४४०

प रि शि ष्ट

[क] अमृतलाल नागर : जीवनी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

[ख] संदर्भ ग्रंथ सूची : हिंदी मराठी अंग्रेजी

[ग] पत्र-पत्रिकाएँ

[घ] हिंदी के जीवनीपरक उपन्यास

प रि शि ष्ट

[क] अमृतलाल नागर : जीवनी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हर रचनाकार अपनी कृति में [रचना में] स्वयं को ही अभिव्यक्त करता है अर्थात् रचना में स्रष्टा का शीलसंस्कार, दृष्टिकोण, परिवेश और मनोभाव व्यक्त होता है। इसीलिए रचनाओं के वस्तुगत अध्ययन और मूल्यांकन के लिए रचनाकार के संबंध में यथोचित जानकारी उपादेय और सहायक होती है । पं. अमृतलाल नागर जी के जीवनी-परक औपन्यासिक पात्रों एवं परिवेश को पूर्ण रूप से समझने तथा उनपर विचार करने के लिए भी नागर जी के संबंध में कुछ संकेत देना आवश्यक है ।

पं. अमृतलाल नागर प्रेमचंद युग के अत्यंत सशक्त कथाकार थे । यों तो हिंदी के सभी बडे कथाकार अपनी किसी न किसी विशिष्टता के कारण अपना अलग-थलग व्यक्तित्व रखते हैं, परंतु नागर जी को हम उनकी कई विशेषताओं के कारण विशिष्ट एवं उल्लेखनीय मानते हैं ।प्रेमचंद, प्रसाद, निराला, वृंदावनलाल वर्मा, यशपाल, जैनेंद्र, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय, अश्क और रेणु सभी बडे कथाकार हैं । उनकी रचनाभूमि भी भरपूर व्यापक और संपन्न है किंतु नागर जी से हिंदी जगत् का पाठक उनकी किस्सागोई की विशेष शैली के कारण अन्यतम रूप से जुडा रहा है । डॉ. आनंद नारायण के शब्दों में - " - - - बल्कि यह कहना अनुचित न होगा कि प्रेमचंद के बाद वे दूसरे बडे कथाकार थे, जिन्होंने अपना पाठक-वर्ग स्वयं तैयार किया था"।[१]

प्रेमचंद के बाद हिंदी साहित्य की दो धाराएँ अलग-अलग प्रवाहित हुई थीं । एक धारा थी इलाचंद्र जोशी, जैनेंद्र और अज्ञेय की, जो मन के अंधकूपों में उतर कर यथार्थ के पीछे के सत्य को जानने का प्रयत्न करते थे तो दूसरी प्रेमचंद की मूल परंपरा को साकार कर रही थी । यशपाल, भगवतीचरण वर्मा और

स्वयं अमृतलाल नागर उसी धारा के पोषक थे । नागर जी ने उनके मध्य एक कलात्मक संतुलन की तलाश और प्रयास किया जिसमें वे सफल भी हुए । उनके उपन्यासों का कथ्य किसी उपदेश-निदेश के माध्यम से नहीं अपितु अनुभव और संवेदना के धरातल पर, बड़ी मार्मिकता से अभिव्यक्ति पाता है । इसीलिए उनके पाठकों का विशाल वर्ग है - देश में और विदेश में भी ।

नागर जी हिंदी के अपने समय के लोकप्रिय उपन्यास और कथा लेखक थे।

जीवन वृत्त :

जन्म : तिथि एवं स्थान --

पं. अमृतलाल नागर जी का जन्म दो सौ वर्षों से उत्तर प्रदेश में बसे, सुसंस्कृत गुजराती ब्राह्मण परिवार में[भाद्रपद कृष्ण ४, संवत १९७३ वि. स.] १७ अगस्त १९१६ को गोकुलपुरा, आगरा में हुआ । इनके पिता का नाम पं. राजाराम जी तथा माता का नाम विद्यावती था ।

परिवार संबंध --

पं. अमृतलाल जी के प्रपितामह माधवराम जी अंग्रेज सरकार की नौकरी में थे । पितामह पं. शिवराम जी इलाहाबाद बैंक में नियुक्त हुए तथा १८९५ ई. में लखनऊ आ बसे । तब से नागर जी का परिवार लखनऊ के चौक मोहल्ले का स्थायी निवासी हो गया । नागर जी के पूर्वज अंग्रेजों की नौकरी में नियुक्त होकर उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों के निवासी हो गए । उत्तर प्रदेश में रहकर नागर परिवार हिंदी भाषी हो गया है । नागर जी प्रायः कहा करते कि, हिंदी और गुजराती दोनों ही मेरी मातृभाषाएँ हैं । इनके दादा-दादी की दो ही संतानें जीवित रहीं - एक पुत्र और एक ही पुत्री । इकलौते पुत्र के प्रति अतिरिक्त मोह ने जैसे उसकी प्रगति रोक दी । डॉक्टर बनने के इच्छुक बेटे को इंटर के बाद पोस्ट ऑफिस में क्लर्क बना दिया गया जिससे उनका स्वभाव क्रोधी बन गया ।

वैसे नागर जी के पिताजी अत्यंत लोकप्रिय, मृदुभाषी, हंसमुख, हाजिर जवाबी और बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।[2] वे अभिनय-दक्ष, चित्रकार एवं कुशल तबला वादक भी थे। माहिर मिस्त्री और फूटबॉल के खिलाडी भी। जीवन की पाठ शाला में अपने माता-पिता के उच्च आदर्श एवं संस्कार अमृतलाल के नैतिक विकास में सहायक हुए।

नागर जी तीन भाई थे - रतनलाल तथा मदनलाल नागर। नागर जी अपने दोनों छोटे भाइयों से अमित स्नेह रखते थे। उनके मंझले भाई रतनलाल फिल्म जगत के कुशल कैमरा डायरेक्टर थे - जो ४ मार्च १९६६ को स्वर्गवासी हो गये। इनके छोटे भाई मदनलाल अकादमी पुरस्कार विजेता, प्रख्यात चित्रकार एवं ललित कला के प्रोफेसर थे, जिनकी अकाल मृत्यु २८ अक्तूबर १९८४ को हुई। अपने दोनों छोटे भाइयोंकी अकाल मृत्यु ने नागर जी को गहरा आघात दिया।

विवाह --

पं. अमृतलाल नागर जी का विवाह अल्पायु में ही ३१ जनवरी सन १९३१ ई. को आगरा में हो गया था। पत्नी का नाम श्रीमती प्रतिभा नागर था। जब नागर जी की उम्र कुल पाँच वर्ष थी और पत्नी की उम्र तीन वर्ष की थी, तभी उनकी सगाई हो गई थी। सोलह वर्ष की उम्र में विवाह हुआ। "डा. बिंदु अग्रवाल के अनुसार इनका गार्हस्थ्य जीवन अत्यंत सुखी था। उन्हें घर के काम में पत्नी का हाथ बँटाने, जैसे कभी-कभी गेहूं बीनने में भी बडा आनंद आता था। ऐसा कार्य वही व्यक्ति कर सकता है, जिसे घर के कोने-कोने से स्नेह हो। वे आपसी बातचीत, यहाँतक कि सार्वजनिक सभा में भी यह कहते नहीं हिचकते थे कि आज वे जो कुछ हैं उसमें बारह आने भर उनकी पत्नी प्रतिभा है और चार आने-भर स्वयं वे हैं। मैं नहीं जानती कि अभी तक इतना अधिक श्रेय किसी लेखक ने अपनी पत्नी को दिया है।"[3] अपनी पत्नी का उल्लेख नागर जी "खरी जीवन संगिनी" कहकर ही करते रहें। और अपनी पत्नी को ७५ प्रतिशत अमृतलाल नागर बताते रहे।

प्रतिभा नागर एक कुशल गृहिणी होने के साथ-साथ एक कर्मठ और सक्रिय कार्यकर्त्री भी थीं । वे घरेलू स्त्रियों के लिए कढाई, सिलाई, संगीत शिक्षा आदि का स्कूल चलाती रहीं । इस स्कूलमें संगीत शिक्षा के लिए एक वेश्या को अध्यापिका पद पर नियुक्त करके अपने अदम्य साहस का परिचय दिया । स्वयं घूम-घूम कर चंदा एकत्रित किया । नागर जी के "ये कोठेवालियाँ" पुस्तक के लिए वेश्याओं के "इंटरव्यूज" में भी प्रतिभा जी ने सक्रिय सहयोग दिया ।

प्रतिभाजी और नागर जी की चार संतानें हैं - दो पुत्र और दो पुत्रियाँ। पुत्र हैं - कुमुद और शरद और पुत्रियाँ हैं - अचला और आरती ।

नागर दंपति की सक्रियता, रुचियों एवं संस्कारों का प्रभाव इनके पुत्र-पुत्रियों और नाती-पोतों पर भी पडा है । इनके बडे पुत्र कुमुद नागर आकाशवाणी दिल्ली में ड्रामा प्रोड्यूसर रंगकर्मी, नाटक एवं बाल साहित्य के लेखक हैं । दूसरे पुत्र शरद नागर औषधि रसायन शास्त्रज्ञ, शौकिया नाट्यकर्मी, रंगमंच के समीक्षक तथा "रंग-भारती" पत्रिका के संपादक हैं । आप ही नागर जी के समस्त साहित्य की व्यवस्थापक भी हैं । श्रीमती अचला नागर आकाशवाणी तथा दूरदर्शन नाटक लेखिका एवं कलाकार भी हैं । छोटी पुत्री श्रीमती आरती पांड्या रंगमंच एवं रेडियो नाट्यकर्मी हैं । नागर जी के घर का वातावरण उनके सुरुचि एवं परिष्कृत संस्कार से व्याप्त है । उनके परिवार का हर छोटा-बडा सदस्य साहित्यिक और कलात्मक रुचि रखता है । एक वाक्य में कह सकते हैं कि नागर जी का परिवार कला-प्रेमियों का परिवार है ।

शिक्षा-दीक्षा --

पिताजी की आकस्मिक मृत्यु के कारण नागर जी के शिक्षा की कोई समुचित व्यवस्था न हो सकी । वे केवल इंटर तक ही पढ सके । परिवार के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण उन्हें नौकरी के लिए विवश होना पडा । युवावस्था में ही नागर जी को संघर्षों से जूझना पडा । डॉ॰ रामविलास शर्मा ने एक बार

नागर जी से कहा, "अब तुम पीएच॰डी॰ कर डालो -" । मैं, पंडित जी ने जवाब दिया, "पहले इंटर करना पडेगा, फिर बी॰ए॰, फिर एम॰ए॰ बडी मेहनत करनी पडेगी । अब पीएच॰डी॰ वीएच॰डी॰ का मोह नहीं है, पहले था । तुमने पंडित की उपाधि दे दी । वह बहुत है ।"

फिर बोले, "चौक हमारी युनिवर्सिटी, हम उसके वाइस चांसलर हैं ।"[4]

जीविकोपार्जन -- [नौकरियाँ]

सर्वप्रथम नागर जी ने सन १९३५ में एक बीमा कंपनी में डिस्पैचर के पद पर कार्य आरंभ किया परंतु अपनी स्वतंत्र एवं उदात्त प्रकृति के कारण अफसर से बन न सकी और अठारहवें ही दिन इस नौकरी से इस्तीफा दे दिया ।

नागर जी ने आर्थिक परेशानियों से त्रस्त होकर सन १९५५ में भारत सरकार के रेडियो विभाग में दूसरी नौकरी स्वीकार की और उन्हें ड्रामा प्रोड्यूसर का सम्माननीय पद प्राप्त हुआ। यहाँ यथावकाश नागरजी के साहित्यिक रचनाकार के रूप पर उनका व्यावसायिक रूप हावी होने लगा । नागर जी मानसिक उहापोह में जकड गए, किंतु उनके इन दोनों रूपों के द्वंद्व में उनका रचनाकार रूप ही विजयी हुआ। यहाँ भी अफसरों के व्यवहार से उन्हें कुछ कटु अनुभव प्राप्त हुए जिनका उल्लेख करते हुए नागर जी कहते हैं - "- - - साहित्यकारों को रेडियो में भरती करते समय अफसरों को यह भी ध्यान में रखना चहिए था कि लेखक भाव और विचार जगत का प्राणी होता है, वह मशीन के पुर्जे की तरह एक मिनट में सौ तस्वीरें भले ही न निकाल सके, मगर भाव या विचार का एक न एक चित्र उतारने में उसका मन भी हरदम गुंजा रहता है । .... इसलिए "स्वराज" के काले साहबों की नौकरी छोड दी ।"[5] इसप्रकार नागर जी ने सन १९५६ में रेडियो विभाग की नौकरी से भी इस्तीफा दे दिया । सन १९५६ ई॰ से ही पं॰ अमृतलाल नागर का एक स्वतंत्र लेखक के रूप में जीवन शुरू हुआ और इस क्षेत्र में वे निरंतर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते गए ।

पत्रकारिता —

सन १९३५ ई. में प्रथम नौकरी से इस्तीफा देने के पश्चात नागर जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया। इससे पूर्व उन्होंने सन १९३४ में ही "यूथ यूनियन क्लब" चौक से पहली बार द्वैमासिक पत्रिका "सुनीति" का संपादन किया था। सन १९३५-३६ में "सिनेमा समाचार" नामक एक पाक्षिक पत्रिका कर सन १९३७ में उन्होंने स्व. नरोत्तम नागर के साथ मिलकर साप्ताहिक "चकल्लस" नामक एक हास्य-व्यंग्य की पत्रिका निकाली जिसमें राजनीति और साहित्य से संबंधित हास्य रस प्रधान और विनोदी, बौध्दिक चर्चाओं से संबंधित लेख हुआ करते थे परंतु उस अंग्रेजी शासन और पूँजीवादी व्यवस्था के समय में इस प्रकार की पत्रिका निकालना और उसे चलाना कठिन कर्म था। परिणाम स्वरूप दो वर्ष बाद ही "चकल्लस" का प्रकाशन बंद करना पडा। सन १९४५ में नागर जी ने "नया साहित्य" और सन १९५३ में मासिक पत्र "प्रसाद" का संपादन भी किया किंतु नागर जी की रुचि स्वतंत्र लेखन की ओर ही विकसित होती रही।

फिल्मी दुनिया से संबंध --

सन १९४० में नागर जी ने फिल्मी दुनिया में पदार्पण किया। वे सन १९४० में फिल्म सिनेरियो के लेखकके रूप में बंबई गये। सन १९४० से १९४७ तक कोल्हापुर, बंबई तथा मद्रास के फिल्म क्षेत्र में रहे, जहाँ वे दो प्रसिध्द निर्माता निर्देशकों, श्री किशोर साहू और महेश कौल के संपर्क में आए। वे वहाँ सफल भी हुए परंतु यह फिल्मी जीवन नागर जी को पूर्ण रूप से प्रभावित न कर सका। यह उनकी रुचि के प्रतिकूल भी था। तत्कालीन फिल्मी वातावरण उन्हें रास न आया अपितु इस वातावरण ने उनके हृदय में घृणा ही उत्पन्न की। फिल्मी जगत में साहित्यिक परिष्कृत रुचि के लोग बिरले थे। फिल्मी लोक अपनी रुचि के अनुकूल कहानी का ढाँचा ही बदल देते थे। सामान्य जीवन से दूर एक कृत्रिमता का आवरण केवल घुटन पैदा करने वाला और उबाऊ था। उस समय के फिल्मी जगत में फैले अनाचार तथा अवगुणों का उल्लेख करते हुए नागर जी लिखते हैं --

"सन ४० में मेरे फिल्म क्षेत्र में प्रवेश करने का समय युग संधि का था । पुरानी थिएट्रिकल कंपनियों के अभिनेता, बाजारु गानेवालियाँ और लेखक, मुंशी तक बहुतायत में थे और आम तौर पर शोहदापन अधिक था, लेकिन मुंशीगण सेठों के मुसाहिब थे । कहानियाँ धूम-धडाके और मारपीठ की ही बना करती थीं । भोंडापन और भोग-विलास की ही धूम थी । कुछ स्टूडिओज में सेठों ने अपने लिए विलास कक्ष भी बना रखे थे । – – – – प्रेमचंद जी निराश होकर लौट गए । "उग्र" जैसे-तैसे निभाकर लौट आये थे । सुदर्शन, अलबत्ता जमे हुए थे और उन दिनों बंबई में ही थे । कविवर प्रदीप जी ने नयी-नयी चमक पायी थी – – – पढे लिखे सुसंस्कृत अभिनेताओं, टैक्नीशियनों और लेखकों की बढती भीड़ के कारण पुराने लोगों में जलन और खुड़पेंच का माद्दा पैदा हो गया था ।"[६] इन्ही स्थिति-यों एवं कटु अनुभवों ने नागरजी जैसे प्रतिभाशाली और प्रबुध्द कलाकार को विक्षुब्ध कर दिया और सन १९४७ में उन्होंने फिल्मी जगत से संन्यास ले लिया । इसका उल्लेख नागर जी ने अत्यंत रोचक शब्दों में किया है -- "१४ अगस्त १९४७ आजादी की पहली रात कविवर श्री नरेंद्र शर्मा के साथ बंबई की सडकों में नया जोश निहारते हुए यह तय किया कि अब बालू पर लकीरें नहीं बनाऊँगा । गांधी वादी आदर्श में चलती दुकान बढा दी और अक्तूबर १९४७ को उत्तर प्रदेश में फिर आकर जम गया ।"[७] फिर भी नागर जी फिल्म क्षेत्र में काफी सफल रहें । श्री प्रकाशचंद्र मिश्र के अनुसार "फिल्मी जीवन के इन सात वर्षों में लगभग २०-२१ फिल्में उनके नाम से आईं । कई फिल्मों में उन्होंने कहानियाँ लिखीं और सिने-रियो संवाद भी लिखे ।"[८] फिल्मी क्षेत्र में अपनी सफलता और अपने योगदान के बारे में नागर जी स्वयं कहते हैं -- "जहाँ तक मेरा अनुमान है, [बिना किसी प्रकार की नक्शेबाजी दिखलाए हुए ही मैं यह कह सकता हूँ] कि भारतीय फिल्मीं लेखकों में डबिंग का कार्य सिध्द करनेवाला मैं पहला ही व्यक्ति था । मुझ से पहले सोविएत फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर्स नामक एक तत्कालीन संस्था द्वारा लेखक प्रेरित होकर भी सफलता प्राप्त न कर पाये थे । यह अटपटा काम था ।"[९] इस प्रकार नागर जी फिल्मी जगत में पूर्णत: सफल रहे ।

आकाशवाणी से संबंध —

सन १९४७ में नागर जी बंबई से फिल्म क्षेत्र छोडकर स्वतंत्र लेखन का संकल्प लेकर लखनऊ वापस आये और लखनऊ आकाशवाणी केंद्र में ड्रामा प्रोडयूसर के पद पर नियुक्त हो गए। यह कार्य उनकी रुचि का होते हुए भी यहाँ उनका स्वतंत्र लेखन सीमाबध्द होने लगा। स्वतंत्र लेखन के प्रति अटूट आस्था होते हुए भी सामाजिक, पारिवारिक दायित्वों के निर्वाह हेतु उन्हें यह नौकरी करनी पडी। उन्हींके शब्दों में " – – – – निश्चय ही साहित्य लेखन का कार्य भी एक कार्य है और साहित्यिक अपने लिए समय और लगन मांगता है।"[10] बडे क्षोभ से नागर जी कहते हैं ---- "स्वराज के काले साहबों की नौकरी छोड़ दी।"[11] इसप्रकार आकाशवाणी से संबंध विच्छेद के पश्चात नागर जी स्वतंत्र साहित्य लेखन के राजमार्ग पर अग्रसर हुए।

लेखकीय प्रभाव एवं प्रेरणा :-

सृजनात्मक शक्ति सब में होती है। साहित्य सर्जन अंत:प्रेरणा से उदभूत होता है। वातावरण एवं परिवेश का प्रभाव मन पर पडता है और भावों विचारों का तीव्र आलोड़न विलोड़न लेखकीय प्रेरणा बन जाता है साथ ही प्रत्येक साहित्यकार की रचना-प्रक्रिया के पीछे कतिपय विशिष्ट प्रेरणाएँ भी होती हैं जिनसे प्रेरित होकर वह साहित्य-सृजन करता है। नागर जी के "एक सुप्रसिध्द साहित्यकार" के रूप के मूल में भी कुछ विशिष्ट प्रेरणाएँ हैं।

बचपन से ही नागर जी की रुचि साहित्य की ओर थी। घर में साहित्यिक वातावरण था। "सरस्वती", "गृहलक्ष्मी", "हिंदू पंच" आदि पत्रिकाएँ बडे चाव से पढते थे। आरंभ से ही नागर जी साहित्यिक विद्वानों के संपर्क में आये। साहित्यिक परिवेश और गोष्ठियों ने उन्हें सृजनशील बनने पर प्रवृत्त किया और तेरह वर्ष की आयु में ही पहली तुकबंदी फूट पड़ी। इस प्रथम मुखर अभिव्यक्ति की प्रेरणा के विषय में नागर जी लिखते हैं - "सन १९२८ में

इतिहास प्रसिद्ध "साइमन कमीशन" दौरा करता हुआ लखनऊ नगर भी आया था । उसके विरोध में यहाँ एक बहुत बडा जुलूस निकला था । पं. जवाहरलाल नेहरु और पं. गोविंद वल्लभ पंत उस जुलूस के अगुवा थे । लड़काई उमर के जोश में मैं भी उस जुलूस में शामिल हुआ । जुलूस मील डेढ मील लंबा था ।उसकी अगली पंक्ति पर जब पुलिस की लाठियाँ बरसीं तो भीड़ का रेला गागे की ओर बढ रहा था । मुझे अच्छी तरह से याद है कि "दो चक्की के पाटों में पिस कर मेरा दम घुटने लगा था । मेरे पैर जमीन से उखड़ गये थे । दायें, बायें, आगे-पीछे चारों ओर की उन्मन भीड़ टक्करों पर टक्करें देती थी । उस दिन घर लौटने पर मानसिक उत्तेजना वश पहली तुकबंदी फूटी । अब उसकी एक ही पंक्ति याद है - "कब लौं कहो लाठी खाया करें, कब लौं कहो जेल सहा करिये ।" वह कविता तीसरे दिन दैनिक -आनंद" में छप गई - बस मैं लेखक बन गया । मेरा ख्याल है दो तीन प्रारंभिक तुकबंदियों के बाद ही मेरा ध्यान गद्य की ओर गया, कहानियाँ लिखने लगा ।"[१२]

श्री प्रकाशचंद्र मिश्र के अनुसार -- प्रसिद्ध हास्य व्यंग्य के लेखक श्री शिवनाथ जी उनके पड़ोसी थे। पं. माधव शुक्ल, डॉ. श्यामसुंदर दास तथा उर्दू शायर पं. ब्रजनारायण "चकबस्त" आदि विद्वानों का उनके यहाँ उठना-बैठना था । कदाचित उन्हींके संपर्क ने ही उन्हें लेखक बनने की प्रेरणा दी हो ।"[१३] बंकिमचंद्र चटोपाध्याय, कविवर रवींद्रनाथ से प्रभाव ग्रहण किया । पं. रूप नारायण पाण्डेय "कविराज" से नागर जी को कहानी-लेखन से संबंधित मार्गदर्शन हुआ । सन १९२९ में उनका परिचय महाकवि निराला से हुआ जिनसे बहुत प्रभावित हुए । श्री दुलारेलाल भार्गव और मिश्र बंधुओं के व्यक्तित्व से वे काफी प्रभावित हुए तथा उन्हें प्रोत्साहन भी मिला । पं. श्यामबिहारी मिश्र द्वारा कहे गए इन शब्दों ने कि, "साहित्य को टके कमाने का साधन कभी नहीं बनाना चाहिए"[१४] नागर जी के मन पर बड़ी गहरी छाप छोड़ी । निराला जी के संपर्क से ही डॉ. रामविलास शर्मा से मित्रता हुई, जो अंतिम समय तक बनी रही । साहित्य-सृजन के आरंभिक दिनों में "प्रसाद" और शरत से इन्हें सर्वाधिक संबल

प्राप्त हुआ । डॉ॰ सुरेश बत्रा के अनुसार " - - - महाकवि प्रसाद के स्वरों ने इन्हें सदा क्रियाशीलता की दिशा दिखलाई है --

"कर्मयज्ञ से जीवन के
सपनों का स्वर्ग मिलेगा,
इसी विपिन में मानस की
आशा का कुसुम खिलेगा ।।"[१५]

नागर जी ने निराला से दृढता पायी तो शरतचंद्र के स्नेह ने उन्हें संवेदनात्मक भावुकता प्रदान की । शरतचंद्र ने नागर जी को लेखन का मूल लक्ष्य बतलाते हुए कहा था " - - - - जो कुछ भी लिखो, वह अधिकतर तुम्हारे अपने ही अनुभवों के आधार पर हो, व्यर्थ की कल्पना के चक्कर में कभी न पडना ।"[१६] इसी को नागर जीने अपने लेखन का मूल मंत्र माना। वे समाज में खूब घुल-मिल कर अपने देखे-सुने और अनुभव किए चरित्रों, प्रसंगों को तनकि कल्पना के पुट से अपने कथा साहित्य में ढालते रहे । नागर जी के प्राय: सभी उपन्यास और कहानियाँ जीवन के यथार्थ पहलुओं का अंकन करती हैं, मानवता, इन्सान की इन्सानियत में उनकी अटूट आस्था है जिसकी प्रेरणा उन्हें मुंशी प्रेमचंद से मिली थी । सन १९३५ में "वाटिका" नामक कहानी संग्रह छपने पर प्रेमचंद जी ने इस संग्रह के विषय में लिखा था - - "यह तो गद्यकाव्य की सी चीजें हैं । मैं रियलिस्टिक कहानियाँ चाहता हूँ, जिनका आधार जीवन पर हो, जिनसे जीवन पर कुछ प्रकाश पड़ सके । मैंने वाटिका के दो चार फूल सूँघे । अच्छी खुशबू है ।"[१७] नागर जी ने प्रेमचंद के कथ्य के मर्म को आत्मसात किया, उस मार्ग पर अग्रसर हुए और वे उनके एक सफल उत्तराधिकारी के रूप में प्रख्यात भी हुए ।

नागर जी के जीवन में अनेक महान साहित्यकार आए, सबसे उन्होंने प्रेरणा ली । अपनी पुस्तक "जिनके साथ जिया" में उन्होंने अपने प्रेरणादायी साहित्यकारों एवं अन्यान्य महानुभावों के विषय में अपने भाव-भीने संस्मरण लिखे हैं । इस पुस्तक में प्रसाद, शरत, सनेही जी, निराला, महादेवी वर्मा, पंत, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, बेढब बनारसी, पढीस, डॉ॰ रामविलास शर्मा, नरेंद्र

शर्मा, सोहनलाल द्विवेदी, नरोत्तम नागर, आदि अनेक लोगों के संस्मरण हैं। उनके साहित्य जीवन के सहयात्री रहे हैं। इसीप्रकार मराठी के विष्णुभट्ट गोडसे और मामा वरेरकर से भी उनके व्यक्तिगत संबंध थे। गुजराती साहित्य के शीर्षस्थ कथाकार कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी से भी नागर जी रचनात्मक प्रेरणा ग्रहण करते रहे हैं। इसीप्रकार नागर जी विदेशी भाषाओं के महान साहित्यकारों से भी प्रेरणा ग्रहण करते थे। चेखव, मोंपासा, गोर्की, फ्लोबेयर के गंभीर साहित्य के नागर जी जबर्दस्त अध्येता थे।

नागर जी के लेखक के पीछे ये ही प्रेरणाएँ रही हैं जिन्होंने उनको एक श्रेष्ठ साहित्यकार और एक ऐसा प्राणवान लेखक-रूप दिया है जिसके द्वारा वे अपने अंतिम समय तक, अपने स्वतंत्र लेखन द्वारा ही अपना जीवन यापन करते रहे। साहित्य क्षेत्र में पदार्पण करनेवाले कलाकार नागर जी की एक आकांक्षा थी। सारिका के सितंबर, १९६२ के अंक में अपनी इस आकांक्षा व्यक्त करते हुए नागर जी ने लिखा था -- " मेरी एक तमन्ना जरूर है, एक दिन अपनी किताबों की रॉयल्अी पर ही निर्वाह करने लायक बन जाउं, जी चाहने पर किताबें खरीद सकूं, घूम सकूं।" इस इच्छा को व्यक्त करने के तेईस वर्ष बाद उनको यह अनुभूति हुई कि उनकी इच्छा पूर्ण हो गई है। वे लिखते हैं "--- ईश्वर की कृपा से मैं अपनी रॉयल्टी की आमदनी से ही आपन जीवन यापन कर रहा हूँ - रॉयल्टी की आय से ही यथाशक्ति कुछ किताबें भी खरीद लेता हूँ, और आवश्यकता पडने पर यात्रा भी कर लेता हूँ। यह बात दूसरी है कि मैं कोठी या कार आदि नहीं खरीद सका। फिर भी संतुष्ट और मन से सुखी भी हूँ।" सत्य श्रमाभ्याम् सफलार्थ सिध्दि:"[१८] [विश्वंभर अरुण को लिखे गए पत्र से] एक कलाकार की साध पूरी हुई। इस सफलता का श्रेय उनकी साधना एवं श्रम को जाता है जो नागर जी को भारतीय मानस की देन के रूप में प्राप्त है।

नागर जी के विपुल साहित्य के संदर्भ में श्री ज्ञानचंद्र जैन लिखते हैं — "आज नागर जी की लेखनी से जितना कुछ भी प्रकाश में आया है वह एक

आइसबर्ग के समान है। जितना दृष्टिपथ में है, उससे कई गुना, पथ से बाहर।"[19]

नागर जी का लेखक व्यक्तित्व एक आत्म सम्मानी, ईमानदार, निष्ठावान लेखक का व्यक्तित्व है, जिसने लेखन को सदैव एक साधना के रूप में ग्रहण किया। आधुनिक जीवन की विषम एवं संघर्षशील स्थितियों में भी अपने स्वतंत्र लेखन पर आँच नहीं आने दी और निष्ठापूर्वक इस व्रत का निर्वाह किया - अपने जीवन के अंतिम समय तक।

शौक एवं अन्य रुचियाँ --

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी रुचियाँ और प्रकृति होती है जिससे उसका व्यक्तित्व निर्माण होता है। नागर जी के शौक और उनकी विभिन्न रुचियाँ ही उनके व्यक्तित्व के निर्माण एवं निखारने में सहायक हुई हैं। एक स्थान पर उनके अंतरंग मित्र डॉ॰ रामविलास शर्मा कहते हैं " - - - नागर जी ऊँचे, गौर वर्ण, तेजस्वी मगर सरल व्यक्ति हैं। चेहरे में केवल आँखें ही आँखें हैं। एकदम घनी काली पुतलियाँ। इन आँखों में केवल एक ही भाव छलकता है, "ढाई आखर प्रेम का" भाव। घृणा, क्रोध, उदासी आदि के भाव उनके ओठों पर हैं, आँखें तटस्थ रहती हैं। जब ओठों पर इन अस्थायी भावों की क्रीडा समाप्त हो जाती हैं तब आँखें फिर मुखर हो उठती हैं।"[20] वे आँखें असीम स्नेह और ममत्व से ओतप्रोत थीं। नागर जी के रहन-सहन में सुरुचि और सादगी थी। उनका प्रिय परिधान था खद्दर का श्वेत कुर्ता-पायजामा और धोती। भड़कीले कपड़े और आभूषणों से उन्हें नफरत थी। परम आस्थावान और नियमित पूजा-पाठ करने के बावजूद धार्मिक आडंबरों और रूढियों से नफरत करते थे।

नागर जी पान, भांग, और मिठाई के बेहद शौकीन थे। पान का डिब्बा हरवक्त साथ रहता था और भाग खाए बिना लिखने का विशेष मूड नहीं आता। यहाँ तक कि रूस यात्रा के दौरान विजया का गोला [पाउडर] चूरन के रूप में उनके साथ था। उन्हीं के शब्दों में उन्होंने डॉ॰ रामविलास से कहा था - " - - - उसके बिना तो जाने का सवाल ही कहाँ उठा था रामविलास। हमने तो विसका चूरन बना के एक बोतल में भर लीना और जब कस्टम वालों ने

रोका ता कह दिया - देसी दवाई है सवेरे सांझ पानी के साथ लेनी पडे है -- सब सालों को जवाब ने तरकैट कर दीना - - - और हम ये ज्जा क वो ज्जा ।"[21] नागर जी ने अपनी रचनाओं में यथावसर भांग-प्रेमी पात्रों का बडा ही रोचक वर्णन किया है । "अमृत और विष" के पुत्ती गुरु "मानस का हंस" के मामाजी तथा "खंजन नयन" के हरिहर चौबे इसके सजीव उदाहरण हैं ।

कन्हैयालाल नंदन ने अंतरंग बातचीत के दौरान नागर जी से पूछा, " - - - बाबूजी, नशा कोई भी हो, आदमी को निकम्मा ही बनाता है । नागर जी का उत्तर था, "हम अपने नशे में शाम को निकम्मे हैं, लेकिन जब जरूरी होता है तो नशे में भी हम सिपाही होते हैं । मुहल्लों वालों से पूछ लो। शहरवालों से पूछ लो । हमारा नारा है चार बजे तक व्यस्त, चार बजे के बाद मस्त । - - - हम शाम को सिर्फ जो गुनाह करते हैं सो करते हैं ।"

नंदन ने कहा "मैं उसे गुनाह नहीं कहना चाहता... स्पष्टीकरण में नागर जी कहते हैं, " अच्छा, तुम जो भी कहना चाहते हो.... गुनाह कह लो, कुछ भी कह लो । तो जो कुछ थोडी बहुत मस्ती में जीने का आलम है, वह शाम को ही है। हम शाम को सिर्फ इसलिए करते हैं कि सारे संसार में कह सकें कि तुम्हारी ऐसी की तैसी, ठेंगे पर हैं आप । ... सबेरे तो फिर से काम करना है ।"[22] अपने शौक, नशे अथवा व्यसन की स्पष्ट स्वीकारोक्ति नागर जी जैसा बिरला व्यक्ति ही कर सकता है ।

नागर जी का यह उन्मुक्त स्वभाव, भांगप्रेम तथा भांग सेवन की ऐसी खुली स्वीकृति उनके हृदय की शिशुवत् निर्मलता को व्यक्त करते हैं परंतु यह मस्ती, यह फक्कडपन, उनका वास्तविक परिचय नहीं है । नागर जी बडे जागरूक आत्मविश्लेषक, चिंतक तथा परिमार्जित साधक कलाकार थे। कलाकार भावजगत का वासी होता है किंतु नागर जी व्यावहारिकता तथा यथार्थ को ही खूब समझते और उसपर जमे रहते थे। अपने अभिन्न मित्र श्री ज्ञानचंद्र जैन को लिखे अपने पत्रों में उन्होंने इस प्रकार आत्मावलोकन किया है । - - - बचपन के संस्कारों ने मेरे दिमाग में यह पूरी तरह से जमा दिया है कि रुपये के बगैर दुनिया नहीं चलती । इसी भावना ने मुझे व्यावहारिक बना दिया है, अपने कलाकार की

आवाज को मैं बराबर अनसुनी करता जाता हूं - - मैं अक्सर यह सोचता हूँ कि "क्या मेरा स्वप्न पूरा हुआ ? और मेरे सपने की वह सुनहरी दुनिया जानते हो क्या है ? - जब मरूँ तो संसार अमर कलाकार कहकर मेरे नाम को प्रतिष्ठा दे ।" - - मेरा दुनियादार मन यह चाहता है कि मैं अमर कलाकार तो बनूँ । साथ ही साथ मेरे मखमली गद्दे, कोठी और मोटरकार भी बनी रहे । - - -"[२४]

इस प्रकार नागर जी बार-बार आत्म विश्लेषण करते - मन, अपनी अच्छाइयों और बुराइयों को भी देखता और अपने दुरंगे जीवन पर उन्हें ग्लानि भी होती । उन्हें कलाकृतियों का संग्रह का भी शौक था । विष्णु प्रभाकर जी एक संस्मरण में लिखते हैं " -- -- जो भी व्यक्ति उनके पास जाता, उसे बड़े चाव से अपने उस अद्भुत संग्रह को दिखाते थे और उसके बाद भांग की मस्ती में ठहाके लगा कर किस्सागोई करते थे । उस तिलस्मी महल में उनके पास जाना, उनसे मिलना एक अद्भुत अनुभव एक अद्भुत उपलब्धि थी ।"[२५]

नागर जी खाने और खिलाने के भी बहुत शौकीन थे । नागर जी और उनकी पत्नी अपने संबंधी, प्रियजनों का आतिथ्य सत्कार हृदय से करते थे ।

नागर जी में भूख सहने की अद्भुत क्षमता थी, यही स्वानुभूत भूख "महाकाल" में जीवंत हुई है । नागर जी ने विनोद और घुमक्कड़ प्रकृति पायी थी। गप्पों किस्सों और चुटकुलों के भंडार नागर जी की रुचियों का संकेत प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में उनके साहित्य में मिल जाता है । नागर जी का घूमना निरुद्देश्य कभी नहीं हुआ। जीवन के हर पल और कण से उन्होंने अनुभव-संचित किया है । वे कहते हैं - "विभिन्न वातावरणों को देखना, घूमना, भटकना, बहुश्रुत एवं बहुपठित होना भी मेरे बहुत काम आता है । यह मेरा अनुभवजन्य मत है कि मैदान में लड़ने वाले सिपाही को चुस्त दुरुस्त रखने केलिए जिस प्रकार नित्य की कवायद बहुत आवश्यक है । उसी प्रकार लेखक के लिए उपरोक्त अभ्यास भी नितांत आवश्यक है । केवल साहित्यिक वातावरण ही में रहनेवाला कथालेखक मेरे विचार में घाटे में रहता है । उसे विविध वातावरणों से अपना सीधा संपर्क निःसंकोच स्थापित करना चाहिए ।"[२६]

इसप्रकार नागर जी कथा-लेखक के लिए उसका सर्वद्रष्टा, बहुश्रुत एवं बहुपठित होना अनिवार्य बताते हैं ।

अमृतलाल नागर का व्यक्तित्व वास्तव में बहुरंगी है। उनमें जितनी गंभीरता-साधना व श्रम उतने ही वे खुशमिजाज तथा मजाक पसंद भी । वास्तव में उनके बौध्दिक पक्ष से उनका हृदय पक्ष ही अधिक बडा । कुछ विषयों को वे कभी हल्के-फुल्के ढंग से ले ही नहीं सकते थे, जैसे :देश की अखंडता, राष्ट्रीय भावना, कलाकार का स्वाभिमान आदि । बातचीत में नागर जी व्यक्तियों के नामों का अपना बनाया हुआ संक्षिप्त रूप का ही प्रयोग करते थे, जैसे - इला-चंद्र जोशी का नाम "इंचजोजी" और जवाहरलाल नेहरू का नाम है "जलाने" [हजरत जलाने] ।"[२७]

नागर जी की रुचियों का क्षेत्र भी अत्यंत व्यापक है । साहित्य तो उनका क्षेत्र था ही, किंतु वे इतिहास, पुराण, पुरातत्त्व, विज्ञान, राजनीति, ज्योतिष, रंगमंच, चलचित्र आदि विषयों के भी मर्मज्ञ थे । उनकी पुत्री डॉ॰ अचला नागर के शब्दों में " - - - आदि विषयों से लेकर आम की जातियों, कुत्तों की नस्लों या हुक्के के जन्म किसी विषय पर वे धाराप्रवाह बोल सकते थे । प्रखर स्मरणशक्ति उनका ईश्वरदत्त गुण था ।"[२८] नागर जी की इन रुचियों, तथा उनके उपर्युक्त सभी विषयों के ज्ञान की साक्षी है - उनकी कृतियाँ ।

इन विषयों के अतिरिक्त संगीत और रंगमंच में भी उनकी रुचि थी। एक अच्छे समाजशास्त्री और विचारक के रूप में भी नागर जी का परिचय दिया जा सकता है - "ये कोठेवालियाँ" इसका उत्तम उदाहरण है, जो वस्तुत: वेश्याओं से लिए गए उनके "इंटरव्यू" से संबंधित है । "नाच्यो बहुत गोपाल" में भी नागर जी की विविध रुचियों का संकेत स्थान-स्थान पर मिलता है । स्पष्ट है कि इन रुचियों तथाउनके माध्यम से प्राप्त अनुभवों से ही नागर जी का साहित्य संपन्न, समृध्द बना है, साथ ही उसने जीवन-जगत को अपने में समाहित भी किया है ।

रचना संसार --

नागर जी की रचनाएँ साहित्य की अनेक विधाओं में हैं । उपन्यास, कहानी, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, संस्मरण, रूपक, नाटक, रेडियो नाटक, अनुवाद, बालसाहित्य, यात्रावृत्त, हास्य-व्यंग्य आदि प्रायः गद्य की प्रत्येक विधा में उन्होंने लिखा है । यद्यपि जीवन की पहली रचना सन १९२९ में साइमन कमीशन के बहिष्कार स्वरूप अपने भारतीय जन मन के आक्रोश की मानसिकता में उपजी एक तुकबंदी [कविता] थी, किंतु उन्होंने बहुत शीघ्र ही अनुभव किया कि उनका क्षेत्र पद्य नहीं अपितु गद्य है, इसीसे उन्होंने कविता लेखन से हाथ खींच लिये ।

सन १९२८ से छिटपुट लेखन के रूप में साहित्य-यात्रा का श्रीगणेश हुआ। १९३२ - ३३ से जमकर लिखना शुरू किया। नागर जी की प्रारंभिक कविताएँ मेघराज इंद्र के नाम से, कहानियाँ अपने नाम से तथा व्यंग्यपूर्ण रेखाचित्र, निबंध आदि तस्लीम लखनवी के नाम से लिखे गए हैं । तदुपरांत नागर जी क्रमशः कथाकार के रूप में सुप्रतिष्ठित हुए ।

प्रमुख कृतियाँ :

कहानी एवं रेखाचित्र :

"वाटिका" [१९३५], "अवशेष" [१९३८], नवाबी मसनद [१९३९], तुलाराम शास्त्री [१९४१], सेठ बांकेमल [१९४४], आदमी नहीं । नहीं । [१९४७], पाँचवाँ दस्ता [१९४८] एक दिल हजार दास्ताँ [१९५५], एटम बम [१९५६], पीपल की परी [१९६३], कालदंड की चोरी [१९६३], मेरी प्रिय कहानियाँ [१९७०], पाँचवाँ दस्ता और सात अन्य कहानियाँ [१९७०], भारत पुत्र नौरंगी लाल [१९७२], चकल्लस [१९८६], हास्य-व्यंग्य ।

उपन्यास :

महाकाल [१९४७], बूंद और समुद्र [१९५६], शतरंज के मोहरे [१९५९], सुहाग के नूपुर [१९६०], अमृत और विष [१९६६], सात घूंघटवाला मुखडा [१९६८], एकदा नैमिषारण्ये [१९६८], मानस का हंस [१९७१], नाच्यो बहुत गोपाल [१९७८],

खंजन नयन [१९८१], बिखरे तिनके [१९८२], अग्निगर्भा [१९८४], करवट [१९८५], पीढ़ियाँ [१९९१]

रिपोर्ताज, साक्षात्कार एवं संस्मरण :

गदर के फूल [१९५७], ये कोठेवालियाँ [१९६०], जिनके साथ जिया [१९७३], टुकड़े टुकड़े दास्तान [१९८६]

नाटक :

परित्याग [१९४४], युगावतार [१९५६], नुक्कड़ पर [१९६३]

जीवनी : चैतन्य महाप्रभु

प्रकाशित रेडियो । टी. वी. नाटक :

बात की बात [१९७४], चंदनवन [१९७६], ~~चक्करदार सीढ़ियाँ और अँधेरा~~ [१९७७], उतार-चढ़ाव [१९८०], चढ़त न दूजो रंग [१९८१], आदि का पुस्तक रूप में प्रकाशन हुआ है । इनके अतिरिक्त नागर जी के तीन रंगमंचीय नाटक एवं २५ से अधिक रेडियो नाटक तथा फीचर, बहुत से निबंध भी हैं जो अभीतक पुस्तकाकार प्रकाशित नहीं हुए हैं ।

बाल साहित्य :

नटखट चाची [१९४७], निंदिया आजा [१९५०], बजरंगी नौरंगी [१९६९], बजरंगी पहलवान [१९६९], इतिहास के झरोखे से [१९७०], बाल महाभारत [१९७१] :

इस प्रकार नागर जी ने बालोपयोगी दर्जन-भर पुस्तकों का लेखन और सन १९४१ से ही निरंतर इसका प्रकाशन किया ।

अनुवाद :

अनुदित उपन्यास है "गदर के फूल [१९५७], बिसाती [मोपासा की कहानियाँ १९३५], प्रेम की प्यास [गुस्ताव फ्लाबेयर कृत "मादाम बोवारी" का

संक्षिप्त भावानुवाद १९३७], काला पुरोहित [एंटन चेखव की कहानियाँ [१९३९] आँखों देखा गदर [विष्णु भट्ट गोडसे कृत "माझा प्रवास १९४८], दो फक्कड [कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के तीन गुजराती नाटक १९५५], सारस्वत" [मामा वरेरकर का मराठी नाटक, १९५६]

सन १९४० से १९४७ तक फिल्म क्षेत्र से जुड़े रहकर कई ~~फिल्में~~ फिल्मों की पटकथा - संवाद लेखन का कार्य किया ।

पं. अमृतलाल नागर की कई रचनाएँ भारत की सभी भाषाओं के अतिरिक्त रूसी भाषा में भी अनूदित हो चुकी हैं । डॉ. वीरेंद्र शर्मा के अनुसार प्रसिध्द उपन्यास "बूंद और समुद्र" का रूसी भाषा में अनुवाद, वी. वीखूखलेव ने किया जो मास्को से सन १९६२ ई. में "काप्लया इ अकियान" शीर्षक से प्रकाशित हुआ है । इसके मुद्रित पृष्ठ ६५३ हैं ।

नागर जी के एक अन्य उपन्यास " अमृत और विष" का अनुवाद मास्को की हिंदी विदुषी एस. त्रूब्नीकोवा ने रूसी, भाषा में किया है जिसका शीर्षक है "नैक्तर इ याद" । ४०८ पृष्ठों में मुद्रित यह अनुवाद मास्को से सन १९७३ में प्रकाशित हुआ है ।"[२९]

बहुविध साहित्यिक प्रतिभा के धनी अमृतलाल नागर कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, निबंध लेखक, अनुवादक और मनीषी विचारक एवं अनेक भाषावेत्ता थे । साहित्य, इतिहास, संस्कृति, और पुरातत्त्व के विविध पक्षों की अनुसंधानात्मक गवेषणा में उनकी गहन अभिरुचि भी । उनका संपूर्ण साहित्य इस तथ्य का प्रबल प्रमाण है कि जो कुछ भी उन्होंने लिखा, उसकी रचना के पूर्व उन्होंने विशद अध्ययन, चिंतन, एवं मनन किया और उस कृति के माध्यम से नवीन दर्शन को रूपायित कर असीम संभावनाओं को उदघाटित किया।

पुरस्कार एवम् सम्मान :

हिंदी कथा साहित्य के समृध्द, स्थापित विकसित स्वरूप की संरचना में जिन साहित्यकारों ने प्रशंसनीय योगदान दिया है उनमें महान कथाशिल्पी अमृतलाल नागर का नाम अग्रगण्य है ।

नागर जी ने कोई भी ऐसा समझौता लेखन के स्तर पर नहीं किया

जिससे उनके स्वतंत्र लेखक को झुकना पड़ता । यह दूसरी बात है कि उन्हें देश के बड़े से बड़े पुरस्कार मिले और सरकारी - गैरसरकारी स्तर पर उन्हें निरंतर सम्मानित और अभिनंदित किया जाता रहा । नागर जी उन लोगोंमें से हैं जिन्हें बहुत सम्मान मिला ।

नागर जी को सन १९५४ में "बूंद और समुद्र" पर काशी नागरी प्रचारिणी सभा का बटुक प्रसाद पुरस्कार एवं सुधाकर रजत पदक प्रदान किया गया । "सुहाग के नूपुर" पर उत्तर प्रदेश शासन का राज्य साहित्य पुरस्कार, प्रेमचंद पुरस्कार के रूप में [१९६२-६३], "अमृत और विष" पर सन १९६७ का साहित्य अकादमी एवं सन १९७० ई का सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार तथा साहित्यिक सेवाओं पर युगांतर का सन १९७२ का पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है ।

नागर जी को हिंदी रंगमंच की विशिष्ट सेवा के लिए उत्तर प्रदेश संगीत अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया [सं. १९७०-७१] । सन १९७२ में उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा "साहित्य वारिधी" की उपाधि से विभूषित किया गया । सन १९७३-७४ का राज्य साहित्य पुरस्कार, उत्तर प्रदेश शासन द्वारा उनके "मानस का हंस" कृति के लिए प्रदान किया गया । सन १९७७ में आकाशवाणी स्वर्ण जयंती के अवसर पर, नागर जी का भारत सरकार की ओर से विशेष सम्मान किया गया । सन १९७८ में "मानस का हंस" पुस्तक पर उन्हें हरजीमल डालमिया पुरस्कार और सन १९८८ में भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता ने उन्हें नथमल भुवालका सम्मान से पुरस्कृत किया था । सन १९७९-८० में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का २१ हजार रुपये का विशिष्ट पुरस्कार भी उन्हें दिया गया ।

राष्ट्रपति ने सन १९८१ में उन्हें पद्मभूषण अलंकार से सम्मानित किया और १९८८ में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने उन्हे "भारत भारती" पुरस्कार घोषित किया । सन १९९० में नागर जी को बिहार राजभाषा विभाग द्वारा डॉ. राजेंद्र प्रसाद शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया ।

अमृतलाल नागर उन लोगों में से है जिन्हें बहुत सम्मान मिला ।

उपर्युक्त पुरस्कारों के अलावा उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए अनगिनत संस्थाओं ने उन्हें पुरस्कार और सम्मान देकर अपने-आपको गौरवान्वित किया : लेकिन नागर जी इतनी सारी कृतियों और इतने सम्मान के बीच एक उपन्यासकार के रूप में ही ज्यादा जिंदा रहेंगे।

अमृतलाल नागर प्रेमचंद परंपरा के एक सशक्त उपन्यासकार थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। उपन्यास के अतिरिक्त कहानी, नाटक, रूपक, सिनेरियो, व्यंग्यलेखन, अनुवाद, ऐतिहासिक शोध, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में उनकी गति असाधारण थी। नागर जी ने सच्चे अर्थों में भारतीय जीवन और उसकी स्वस्थतम परंपराओं को अपने लेखन में स्थान दिया है। भारतीय जीवन में संस्कृति को विकृत करनेवाली प्रवृत्तियों पर नागर जी ने व्यंग्य के माध्यम से जबरदस्त प्रहार किया है। भारतीय जीवन और समाज में खुलेपन को उन्होने अपनी रचना वैविध्यता से उपन्यास, कहानी, हास्य-व्यंग्य के रूप में अभिव्यक्त किया है।

यद्यपि आर्थिक कठिनाइयों के कारण उनकी विधिवत शिक्षा सिर्फ हाईस्कूल तक ही हो पाई थी। श्री इंदुप्रकाश पाण्डेय लिखते हैं --- केवल हाईस्केल उत्तीर्ण नागर जी अपने स्वाध्याय और अध्ययवसाय से न केवल हिंदी के महानकहानीकार और उपन्यास लेखक बन गए, एक पुरातत्ववेत्ता, समाज शास्त्री एवं भाषाविद भी बन गए।"[30] अंग्रेजी, बंगला, हिंदी, गुजराती, मराठी, तमिल, उर्दू आदि भाषाओं का नागर जी को अच्छा ज्ञान था।

नागर जी द्वारा रचित समूचे साहित्य का ब्योरा कुछ पंक्तियों में देना संभव नहीं है। केवल इतना कहा जा सकता है कि साहित्य की कोई ऐसी विधा नहीं है जिसमें नागर जी की पैठ नहीं थी। उनकी कोई १२५ कृतियाँ हैं जिनमें १४ उपन्यास हैं।

भाषा के क्षेत्रीय प्रयोगों को विविध वर्गों में प्रयुक्त भिन्नताओं के साथ ज्यों का त्यों उतार देने में नागर जी सिध्दहस्त हैं। उनका बहुमूल्य योगदान यह है कि उन्होंने कुछ बोलियों को साहित्य में प्रतिष्ठित किया है और बोलचाल

की महज सहज, चंचल भाषा का आविष्कार किया है । वे किस्सागोई के सिध्द हस्त थे और ऐसा रोचक कथानक बुनते थे कि उनके उपन्यास शुरू से अंत तक बिना पढे छोडना मुश्किल होता है। नागर जी ने निश्चय ही हिंदी कथा साहित्य को समृध्द किया है ।

सुप्रसिध्द आलोचक नामवर जी ने बहुत सही कहा है कि "नागर जी उन लेखकों में थे जिन्होंने जीवन में विष पीकर भी समाज को अमृत दिया । वह अजातशत्रु थे । हरदिल अजीज और हर लेखक को दोनों बाहें खोलकर सीने से लगाने वाले - फिर चाहे उसके विचार कुछ भी हों । इस जमाने में ऐसे विशाल हृदयवाले मानवीय लेखक कम ही हुए हैं ।"[31]

नागर जी ने अपनी संपूर्ण आयु भारतीय मनीषा के आदर्श के अनुरूप व्यतीत की । एक छद्मरहित जीवन बिताया। उनके संपूर्ण लेखन और व्यक्तिगत जीवन पर दृष्टि डालने से यह बात साफ हो जाती है कि अनेकविध संघर्षों में तपते हुए उन्होंने एक अनुकरणीय सार्वजनिकता हमारे सामने रखी । पारिवारिक उत्तरदायित्व को संम्हालते हुए भी लेखन की साधना में वे एक तप:पूत तपस्वी की तरह जिए ।

नागर जी चाहे अतीत का आख्यान दुहरा रहे हों या समसामयिक जीवन को अभिव्यक्ति दे रहे हो, उनकी चिंता का केंद्र बराबर वर्तमान रहता था, जिसके भीतर उज्ज्वल भविष्य के लिए संघर्ष की प्रेरणा निहित थी ।

वे अपने अग्रजों के प्रति जितने विनयशील थे, अनुजों के प्रति उतनी ही ममता और सहानुभूति रखते थे । उनकी रचनाओं को पढकर उन्हें प्रोत्साहित करना नागर जी का स्वभाव था । दृष्टि गंभीर होते हुए भी उसमें मस्ती भी थी, और यही था उनका चरित्र । ऐसी व्यक्ति का अवसान साहित्यकी ही नहीं बल्कि संपूर्ण मानवता की क्षति है ।

अमृतलाल नागर मानवता के प्रबल पक्षधर, उदारमना, अजातशत्रु, प्रिय जनों के "बाबूजी" भारतीय संस्कृति की समन्वयात्मक भावना से ओतप्रोत, सहज, सरल, प्रभावी भाषा के प्रतिभावान साहित्यकार थे । उन्होंने अपनी कालजयी

रचनाओं से भारतीय कथा साहित्य को एक ऐसी जीवंतता प्रदान की जिसने न केवल भारत में प्रत्युत संपूर्ण विश्व में सुधी अध्येताओं और समीक्षकों को आकृष्ट कर, प्रेरित-प्रभावित किया। उनकी स्मृति एवं कीर्ति सदैव अजरामर रहेगी । स्व॰ अमृतलाल नागर जी की पावन स्मृति को शतशः नमन तथा विनम्र श्रध्दांजलि अर्पित है ।

--- o ---

संदर्भ सूची :

१. आजकल मई १९९०, पृ. १३

२. अमृतलाल नागर का उपन्यास-साहित्य : प्रकाशचंद्र मिश्र, पृ. ३६

३. साप्ताहिक हिंदुस्तान, १५ अप्रैल १९९०, [एक आत्मीय व्यक्तित्व - डॉ. बिंदु अग्रवाल, पृ. २८]

४. डॉ. रामविलास शर्मा की पुस्तक "पंचरत्न" से

५. सीमांत प्रहरी : अमृतलाल नागर;--अंक पृ. २०

६. वही, पृ. १० + १५ अगस्त १९६६

७. अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य : प्रकाशचंद्र मिश्र, पृ. ४१
नागर जी द्वारा दिए गए हस्ताक्षरयुक्त लिखित इंटरव्यू से

८. वही, पृ. ४१

९. वही, पृ. ४१

१०. सीमांत प्रहरी : अमृतलाल नागर अंक, पृ. १६-१८

११. वही पृ. २०

१२. नीर-क्षीर : अमृतलाल नागर अंक, अगस्त १९६६, पृ. ८

१३. अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य : प्रकाशचंद्र मिश्र, पृ. ४३

१४. वही, पृ. ४४

१५. अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिध्दांत : डॉ. सुदेश बात्रा, पृ. १४

१६. जिनके साथ जिया : अमृतलाल नागर, पृ. १६

१७. नीर-क्षीर : अमृतलाल नागर अंक, १५ अगस्त १९८६, सम्मितियाँ एवं संदेश ।

१८. सारिका : १६-३१ अगस्त, १९८५, पृ. ३१

१९. नीर क्षीर : अमृतलाल नागर अंक, पृ. ४७

२०. वही, पृ. २३

२१. सारिका : अमृतलाल नागर विशेषांक, पृ. ५७

२२. सारिका, १६-३१ अगस्त १९८५, पृ. ६९, साक्षात्कार अमृतलाल नागर के साथ कन्हैयालाल नंदन की अंतरंग बातचीत

२३. साप्ताहिक हिंदुस्तान, १५ अप्रैल १९९०, पृ. २१

२४. सारिका : १६-३१ अगस्त ८५, पृ. २६[जीवन के स्वप्न की साधना : ज्ञानचंद्र जैन]

२५. साप्ताहिक हिंदुस्तान : १५ अप्रैल १९९०, पृ. २२

२६. नया जीवन : मई-जुन १९६२

२७. अमृतलाल नागर : भारतीय उपन्यासकार : डॉ. पुष्पा बंसल, पृ. २६

२८. साप्ताहिक हिंदुस्तान : १५ अप्रैल १९९०, पृ. २३

२९. आजकल : मई १९९०, पृ. ४०

३०. सारिका : १६-३१ अगस्त १९८५, पृ. ५२

३१. आजकल : मई १९९०, पृ. ३ - संपादकीय

....

[ग] पत्र - पत्रिकाएँ

१. दस्तावेज - ३० : [साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका], संपादक - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, जनवरी - १९८६, वर्ष - ८, अंक - ३.

२. धर्मयुग - ८ अप्रैल - १९७३.

३. समीक्षा - संपादक - डॉ. गोपाल, अप्रैल - जून - १९८२, वर्ष - १६, अंक-१.

४. साहित्य संदेश - संपादक - महेंद्र, मख्खनलाल शर्मा, अक्तूबर १९६२, अंक - ४, भाग - २४.

५. साप्ताहिक हिंदुस्तान : २१ फरवरी - १९८८, १५ से २१ अप्रैल, १९९० [अमृतलाल नागर स्मृति संदर्भ]

६. आलोचना - मधुरेश , जुलाई - १९६४.

७. प्रकर - मार्च १९७३

८. सीमांत प्रहरी - [अमृतलाल नागर अंक,] १५ अगस्त, १९६६, [मंसूरी]

९. नीरक्षीर - अमृतलाल नागर, अंक अगस्त १९६६, कानपुर.

१०. परिशोध - डॉ. रामधारी सिंगल, मार्च १९८६, अंक - ४२

११. वीणा - संपा. श्यामसुंदर दास, १९८८, अंक - ८, वर्ष ६२, रविंद्रनाथ टैगोर मार्ग, इंदोर - १, [म.प्रदेश]

१२. संकल्प - [प्रेमचंद स्मृति विशेषांक]जुलाई - १९८१, अंक - १.

१३. मधुमती - [त्रैमासिक] सितम्बर १९६७ से मार्च १९६८, वर्ष ६,७ , अंक - ९,१०,११,१२,१,२,३.

१४. जमधुमती - जुलाई १९९२

१५. नागरी पत्रिका - सन १९७२, दिसम्बर, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी,

१६. आजकल - संपा. सुरेश चंद्र शर्मा, मई - १९९०, वर्ष ४६, अंक - १, पूर्णांक - ५४९.

१७. ज्ञानशिखा - संपा. डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, सितम्बर - १९९१, वर्ष - ३, अंक - ५.

१८. संचेतना - [अमृतलाल नागर की कथा प्रतिभा की अुपज]जून- १९८२, वर्ष - १६, अंक - ४, पूर्णांक - ६१.

१९. नया जीवन - मई - जून, १९६२.

कोश

१. हिंदी साहित्य कोश, भाग - १,२ डॉ. धीरेंद्र वर्मा, द्वितीय संस्करण , संवत् - २०२०.

२. हिंदी उपन्यास कोश - सूर्यकांत गुप्त, सूर्य प्रकाशन , नई सड़क, दिल्ली-६ बसंत पंचमी - १९७५.

३. हिंदी उपन्यास कोश, खंड - १, संपा. डॉ. गोपाल राय, प्रका. वर्ष १९६८-, १९६९.

४. भारतीय लेखक कोश - रामगोपाल परदेसी, सन् १९७०.

५. बृहत् हिंदी ग्रंथ - सूची - यशपाल महाजन, कृष्णामहाजन, सन् १९६५.

६. साहित्यिक कोश - डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, सन् १९७३.

७. हिंदी साहित्य कोश - भाग - २, [नामवाची शब्दावली] संपा. धीरेंद्र वर्मा, वाराणसी, ज्ञानमंडल लिमिटेड.

८. हिंदी साहित्याब्द कोश - संपा. देवेंद्रनाथ शर्मा : गोपाल राय ग्रंथनिकेतन, ८७/२४, राजेंद्रनगर, पटना - ८०० ०१६, प्र.सं. १९७३.

९. हिंदी उपन्यास वार्षिकी - १९७५, सूर्यकांत गुप्त, सूर्य प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली - ११० ००६. प्र. संस्करण - मार्च - १९७८.

[घ] हिंदी के जीवनीपरक उपन्यास

१. अमृतलाल नागर : मानस का हंस, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६, सं. १९७२
२. -"- : खंजन नयन, -"- -"- १९८७
३. इकबाल बहादुर देवसरे : बाबा कहि कहि जाहिं : साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्रथम संस्करण १९८४
४. किशोरीलाल गोस्वामी : कनक कुसुम वा मस्तानी, वृंदावन, सं. १९०३
५. -"- : सुलताना रजिया बेगम वा रंगमहल में हलाहल, काशी, सं. १९०४
६. कृष्ण भावुक : हरा दर्पण : राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६, १९८७
७. गुरुदत्त : महाकाल, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६, १९७५
८. चतुरसेन शास्त्री, आलमगीर, भागलपुर, १९५४
९. चित्रा चतुर्वेदी "कार्तिका" : महाभारती, भारतीय ज्ञानपीठ, १९८७
१०. पं. जनार्दन राय नागर : जगद्गुरु शंकराचार्य, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर-१, १९८८
११. दशरथ ओझा : एकता के देवदूत : शंकराचार्य, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६ १९८८
१२. नरेंद्र कोहली : दीक्षा, पराग प्रकाशन, दिल्ली १९७५
१३. " : अवसर, -"- १९७७
१४. " : संघर्ष की ओर -"- १९७८
१५. " : युद्ध -"- १९७९
१६. डॉ. भगवतीशरण मिश्र : पुरुषोत्तम : नया साहित्य, कश्मीरी गेट, दिल्ली १९९१
१७. रांगेय राघव : भारती का सपूत, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, १९५४
१८. " : रत्ना की बात -"- १९५४
१९. " : लोई का ताना -"- १९५४
२०. " : देवकी का बेटा -"- १९५४
२१. " : यशोधरा जीत गई -"- १९५४
२२. " : लखिमा की आँखें -"- १९५८

२३. रांगेय राघव : जब आवेगी कालघटा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, १९५८
२४. " : धूनी का धुआँ -"- १९५९
२५. " : मेरी भवबाधा हरो -"- १९६०
२६. राजेंद्र मोहन भटनागर : सूरश्याम, पूर्वोदय, नई दिल्ली-२, १९७८
२७. रामकुमार भ्रमर : दूसरा सूरज, किताब घर, दिल्ली-३१, प्रथम संस्क. १९८१
२८. वारींद्रनाथ दास : मीरा और मल्हार, रवींद्र प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९८५
२९. विष्णुचंद्र शर्मा : चाणक्य की जयकथा, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, १९८२
३०. विश्वंभरनाथ उपाध्याय : जाग मच्छंदर गोरख आया , राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, १९८३
३१. विश्वंभरनाथ उपाध्याय : जोगी मत जा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली-६ १९८९
३२. वीरेंद्र कुमार जैन : अनुत्तर योगी [४ खंड], श्री वीर निर्वाण ग्रंथ प्रकाशन समिति, इंदौर, १९७४, ७५, ७८, ८१
३३. वीरेंद्र मोहन रतूडी : मीरा बावरी : उमेश प्रकाशन, दिल्ली, द्वि. सं. १९६३
३४. वृंदावनलाल वर्मा : अहिल्याबाई, झाँसी, १९५५
३५. -"- : माधवजी सिंधिया, झाँसी, १९५६
३६. -"- : झांसी की रानी : लक्ष्मीबाई, झांसी, १९४६
३७. हजारीप्रसाद द्विवेदी : बाणभट्ट की आत्मकथा, बंबई, १९४९

0000000